

वर्तमान युग की प्राथमिकता : कन्या संस्कार निर्माण

—डॉ. सोहनराज तातेड़

संस्कार निर्माण की आवश्यकता

भारतीय एवं भारतीयेतर दर्शनों ने संस्कार शब्द को अपने-अपने ढंग से प्रतिपादित किया है। **संस्कार निर्माण का अर्थ मानव में मानवीय गुणों का समावेश है।** इस परिभाषा से सभी दर्शन सहमत हैं। आज का युग भौतिकता एवं विज्ञान का युग है। विज्ञान ने हर क्षेत्र में नई-नई खोजें करके मनुष्य के जीवन को अत्यन्त सुविधावादी बना दिया है। सुविधा ने भौतिकता को जन्म दिया। आज विश्व में भौतिकता की चकाचौंध उत्कृष्टता पर है। भौतिक विकास के साथ-साथ आज विश्व में लगातार मूल्यों का ह्रास हो रहा है। सबसे बड़ी चिंता की बात है कि मानवीय मूल्यों में सबसे ज्यादा गिरावट आई है। आज मानवीय मूल्य करुणा, भाईचारा, संवेदनशीलता, नैतिकता, सहनशीलता, त्याग, नैतिकता, ईमानदारी, सादगी, सकारात्मक सोच आदि प्रायः लुप्त से हो रहे हैं। इस कारण आज विश्व में आतंकवाद, अनैतिकता, असंवेदनशीलता, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, निर्दयता, अविश्वास, बेईमानी, नकारात्मक सोच, तनाव, आक्रोश, अशांति, अविश्वास आदि अमानवीय गुणों का बोल बाला है। नैतिक इंसान अपने दैनिक जीवन में घुटन महसूस कर रहा है। मानवीय मूल्यों के समावेश के लिए आज संस्कार निर्माण की अति आवश्यकता महसूस की जा रही है। वैसे तो सुसंस्कारी होना मानव मात्र के लिए हितकर है लेकिन मैं विशेष तौर से मेरे आलेख में कन्या संस्कार निर्माण की आवश्यकता, उपयोगिता, उपायों एवं प्रयोगों पर प्रकाश डालने का विनम्र प्रयास कर रहा हूँ। विश्व शांति की सबसे छोटी इकाई मनुष्य है। आचार्य तुलसी ने बहुत ठीक कहा है—

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से।

राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।।

विश्व में शांति का साम्राज्य स्थापित करने के लिए विश्व की सबसे छोटी इकाई मनुष्य को सुधारने के उपाय ढूँढने होंगे। युग निर्माण योजना में ठीक ही कहा गया है—

“अपना सुधार संस्कार की सबसे बड़ी सेवा है।”

अगर हर मानव अपना-अपना सुधार कर ले तो विश्व अपने आप सुधर जायेगा। अपना सुधार करके मानव विश्व की बहुत बड़ी सेवा कर सकता है। आज विश्व सुधार की प्राथमिकता है—इन्सान को **“गुड मैन”** बनाना। आज विश्व के चिंतक इस बात पर जोर दे रहे हैं कि मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के बिना विश्व में खुशहाली नहीं आ सकती। आज वैश्वीकरण ने पूरे विश्व को एक गांव का रूप दे दिया है। जैसे गांव का दायरा छोटा होने के कारण गांव में घटित होने वाली घटना तुरन्त हर ग्रामवासी तक पहुँच जाती है, उसी प्रकार आज दूरसंचार की क्रांति के कारण विश्व के किसी कौने में घटित होने वाली घटना टी.वी., अखबार, आई.एस.डी., इन्टरनेट, ईमेल एवं मोबाईल के माध्यमों से कुछ ही क्षणों में पूरे विश्व में फैल जाती है। यह मानवीय दुर्बलता है कि वह अच्छाई की तुलना में बुराई को बहुत जल्दी ग्रहण करता है। हमें मानवीय मूल्यों के प्रति विश्व में जागृति पैदा करनी होगी। अच्छाई के प्रति आकर्षण पैदा करना होगा। व्यक्ति बुराई की तरफ जल्दी आकर्षित होता है। मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए हमें संस्कार निर्माण का अभियान चलाना होगा। आज पूरे जगत में यह आवश्यकता महसूस की जा रही है कि प्रयोगों एवं प्रशिक्षण के माध्यम से व्यक्ति को सुसंस्कारित किया जाये एवं सुसंस्कारी व्यक्ति प्रयास करके कई

अन्य व्यक्तियों को सुसंस्कारित कर सकता है। यह शृंखला गुणित होते-होते विश्व मानव जाति में सुसंस्कारी लोगों का प्रतिशत बढ़ता जायेगा।

कन्या संस्कार निर्माण की उपयोगिता

कन्या बीज है, माँ वृक्ष है तथा दादी वट वृक्ष है। जैसा बीज होता है वैसा पौधा होता है। अगर हम बीज को ठीक कर दें तो निश्चित ही पौधा अच्छा होगा। कन्या का जीवन कोरे कागज की तरह होता है जैसा हम चाहें उस पर लिख सकते हैं। संस्कार निर्माण का सबसे अच्छा समय बचपन होता है। बचपन में दिए हुए संस्कार जीवन भर उपयोग में आते हैं। कन्या दो घरों को संवारती है। शादी से पूर्व अपने माँ बाप के घर को संवारती है तथा शादी के बाद ससुराल को संवारती है। आज की कन्या भावी माँ है। अगर कन्या सुसंस्कारी है तो माँ बनने पर वह अवश्य ही सुसंस्कारी होगी। माँ बच्चे की पहली पाठशाला है। बच्चे को सबसे अधिक व गहन संस्कार अपनी माँ से मिलते हैं। आयुर्वेद के अनुसार शिशु के भेजा, रुधिर व हृदय कोमल अंग माँ की रज से तथा कठोर अंग हड्डियाँ, कंश, नाखून, पिता के शुक्राणु से मिलते हैं। गर्भ अवस्था में शिशु माँ के रुधिर व भोजन रस से अपने शरीर का पोषण करता है। बच्चे का लालन-पालन माँ करती है। शिशु को बचपन में अधिकतर संस्कार माँ से ही मिलते हैं। नारी जाति वात्सल्य, करुणा, श्रद्धा, कोमलता की प्रतिमूर्ति होती है। नारी को घर की लाज कहा गया है। पुरुष का घर बसाने में नारी की अहम् भूमिका है। कहा गया है माँ दस बच्चों का पालन पोषण कर सकती है, पिता नारी के अभाव में एक संतान का भी ढंग से पालन पोषण नहीं कर सकता। माँ के हृदय में ममता होती है। गृहस्थ में नारी के बिना पुरुष का जीवन अधूरा रहता है। स्त्री-पुरुष गृहस्थ रूपी रथ के दो पहिए हैं। नारी ममता की प्रतिपूर्ति होती है लेकिन संकट आने पर दुर्गा, झांसी की रानी भी बन सकती है। आज विश्व में राजनीति, प्रशासन, व्यापार, विज्ञान, दूरसंचार, शिक्षा, मेडिकल साइन्स सभी क्षेत्रों में पुरुषों से नारियों का दर्जा ऊंचा है। आज हर क्षेत्र की प्रगति में नारी पुरुष के बराबर अपनी योग्यता दर्ज करवा रही है। नारी की पृष्ठभूमि कन्या है। अतः कन्या को सुसंस्कारी बनाने की अहम् उपयोगिता है। कन्या को अगर सुसंस्कारी नहीं बनाया जाता है तो जब वह नारी के रूप में उद्घाटित होती है तो उसका अत्यन्त भद्दा रूप समाज के सामने आता है। नारी के भद्दे रूप को देखकर समाज कलंकित हो जाता है तथा समाज के व्यक्तियों का सिर लज्जा से झुक जाता है। आज कुसंस्कारी नारियों के चरित्र के कारण समाज में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। सुसंस्कारी नारी जीवन का आधार है तो कुसंस्कारी नारी जीवन की बरबादी है। आज विश्व में अगर हम भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहते हैं तो बच्चों को सुसंस्कारी बनाएँ। आप किसी भी कोण से सोचिए अगर समाज को अच्छा करना है तो कन्या को सुसंस्कारी बनाना होगा।

संस्कार निर्माण के उपाय

वर्तमान के संस्कार हमारे भविष्य का भाग्य (कर्म) बनाता है। पूर्व में अर्जित संस्कार आज का हमारा भाग्य (कर्म) है। जैन दर्शन में अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा ज्ञान के साधन माने गये हैं। धारणा में हमारे संस्कार स्टोर होते हैं। संस्कार वर्तमान जन्म में उदय में आ सकते हैं तथा भावी जन्मों में भी उदय में आ सकते हैं। संस्कार हमारे कृत कर्म कहलाते हैं। हजारों वर्षों के संचित संस्कार आज उदय में आ सकते हैं, या आज के संस्कार भविष्य के हजारों वर्षों के बाद भी उदय में आ सकते हैं। जैन दर्शन में कर्म-सिद्धांत के अनुसार यह कर्मों की स्थिति, अनुभाग, प्रदेश, प्रकृति आदि बंध अवस्थाओं पर निर्भर करता है। मन, वचन, काया हमारी प्रवृत्ति के अंग हैं। शरीर, इन्द्रियों, मन, बुद्धि, चित्त, भाव हमारे जीवन के अंग हैं। संस्कार निर्माण करने के लिए हमें सूक्ष्म जगत में जाना होगा। हमें अवचेतन मन तक जाना होगा। अवचेतन मन में रूपांतरण होता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्राइड ने मन के तीन स्तर बताए हैं—(1) चेतन मन (2) अवचेतन मन (3) अचेतन मन

चेतन मन हमारे चित्त के स्तर पर कार्य करता है। कल्पना, चिन्तन, स्मृति चेतन मन के कार्य है। हमारी स्थूल शरीर की सारी प्रवृत्तियों का संचालक चेतन मन है। इन्द्रियों बाहर से विषयों को ग्रहण करके चेतन मन को देती हैं। चेतन मन त्रैकालिक है। वह भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों रूपों में कार्य करता है। हमारे भौतिक जगत् के सभी कार्य चेतन मन द्वारा संचालित होते हैं। शरीर, वाणी का संचालन चेतन मन करता है। अब हम स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा करते हैं तो स्थूल शरीर के बाद सूक्ष्म शरीर—तैजस शरीर से हमारा सम्पर्क होता है। तैजस शरीर Electric, Etheric या Astral body कहलाता है। प्राण का संचालन तैजस शरीर से होता है। प्राण शक्ति के बड़े-बड़े चमत्कार तैजस शरीर के माध्यम से ही संपादित होते हैं। तैजस शरीर के अंग लेश्या, भाव हैं। अवचेतन मन तैजस शरीर से जुड़ा हुआ है जहां शब्द की पहुँच नहीं है केवल तरंगों का जगत् है। जो बात अवचेतन मन तक चली जाती है वहां रूपान्तरण होना प्रारम्भ हो जाता है। अनुप्रेक्षा के माध्यम से अगर हम हमारे भाव अवचेतन मन तक पहुँचा दें तो हम रूपांतरित हो जाते हैं। कन्या को सुसंस्कारी बनाने के लिए कायोत्सर्ग, ध्यान, अनुप्रेक्षा के द्वारा संस्कारों को उसके अवचेतन मन तक पहुँचाना होगा जहाँ वे स्थायित्व ग्रहण कर लेते हैं। जो बात अवचेतन मन ने ग्रहण कर ली वह भुलाई नहीं जा सकती है। बार-बार अवचेतन मन में भावों को पुष्ट करने पर व्यक्ति वैसा ही बन जाता है। अगर बार-बार मानवीय गुण अनुप्रेक्षा के माध्यम के कन्या के अवचेतन मन तक पहुँचाए जाये तो फिर वह वैसी बन जाती है, जैसा हम चाहते हैं।

हम अवचेतन मन से भी आगे चलें। सूक्ष्मतम शरीर कर्म शरीर है जो हमारी आत्मा के साथ दूध-मिश्री की तरह घुला मिला हुआ है। आत्मा के स्पंदन होते हैं। कर्म शरीर के स्पंदन होते हैं। कर्म शरीर से जुड़ा हमारा अचेतन मन है। जहां सारे संस्कार गोदाम में संग्रहित हो जाते हैं तथा उदय का निमित्त पाकर प्रकाशित हो जाते हैं। अचेतन मन हमारा वेयर हाउस है, जिसमें शुभ-अशुभ संस्कारों का भण्डार कई जन्मों का संग्रहित होता है। जो हमारी ईच्छाएं तृप्त नहीं होती हैं, वे सभी अचेतन मन में स्टोर से जाती है। आज जो तैजस शरीर, स्थूल शरीर के सम्पर्क में आ रहा है, वह कच्चा माल कर्म शरीर, अचेतन मन के गोदाम से ला रहा है। आचार्य महाप्रज्ञजी के शब्दों में हम “शोधन की प्रक्रिया” को समझें। कर्मों का शोधन करें।

संस्कार निर्माण का प्रायोगिक पक्ष

संस्कारों को स्थायित्व देने के लिए प्रयोग एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता रहती है। कन्याएं सुसंस्कारित होंगी तो परिवार सुसंस्कारी होंगे। कन्या आगे जाकर जननी का दर्जा लेती है। जननी बच्चे की प्रथम पाठशाला है। छोटा बच्चा सबसे अधिक संस्कार माँ से लेता है। अतः वैसे तो संस्कारी हर मानव को होना चाहिए लेकिन कन्याओं को संस्कार देने से संस्कार आगे से आगे गुणित हो जायेंगे। संस्कार निर्माण का सबसे सशक्त माध्यम मैं प्रेक्षाध्यान विधि को मानता हूँ। कन्याओं को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग और प्रशिक्षण से सुसंस्कारित किया जा सकता है। प्रेक्षाध्यान के आठ चरणों के प्रायोगिक रूप एवं उनसे होने वाले लाभों के बारे में मैं चर्चा प्रस्तुत कर रहा हूँ।

(1) कायोत्सर्ग

इस विधि में काया (शरीर) का उत्सर्ग किया जाता है। काया (शरीर) होते हुए भी उसका भान भूला जाता है। स्वतः सूचनाओं के द्वारा शरीर के प्रत्येक अवयव को शिथिल व तनाव मुक्त किया जाता है। स्वतः सूचना के द्वारा यह महसूस किया जाता है कि शरीर का प्रत्येक अंग शिथिल, तनावमुक्त, हल्का हो गया है। इस अवस्था में हम शरीर होते हुए भी उसका भान भूल जाते हैं। कई लोग तो कायोत्सर्ग में इतने गहरे चले जाते हैं कि उसका तैजस शरीर (Astral body) स्थूल शरीर से बाहर निकलकर दूर-दूर तक यात्रा करने लग जाता है। इस प्रयोग से सबसे बड़ा लाभ है कि हमें “भेद विज्ञान” की अनुभूति होती है। ऐसा महसूस होता है कि आत्मा अलग शरीर अलग। यह “भेद विज्ञान” सम्यक् दर्शन सिखाता है। जीवन का रूपांतरण चालू हो जाता है।

(2) श्वास प्रेक्षा

इस प्रयोग से श्वास की गति को मंद किया जाता है। श्वास लम्बा, समतल एवं धीरे-धीरे लेने का अनुभव किया जाता है। दोनों नथुनों के बीच आते-जाते श्वास की प्रेक्षा की जाती है। जितना समय श्वास लेने में लगता है, प्रयोग, प्रशिक्षण के माध्यम से श्वास निकालने में भी उतना ही समय लगना चाहिए। श्वास की संख्या को सामान्यतया 15-16 से घटाकर 6-7 प्रति मिनट तक किया जाता है। जितनी संख्या घटेगी उतनी ही मानसिक एकाग्रता बढ़ेगी। श्वास प्रेक्षा से सबसे बड़ा लाभ आवेशों, तनावों से छुटकारा पाया जाता है। इससे जीवन में आनन्द की अनुभूति होती है। श्वास प्रेक्षा से मानसिक शांति मिलती है तथा मानसिक एकाग्रता बढ़ती है।

(3) अन्तर्यात्रा

इस प्रयोग से सुषुम्ना के सबसे नीचे के छोर से शक्ति को उठाकर सुषुम्ना के माध्यम से सिर के सबसे उंचे स्थान, चोटी के स्थान के हिस्से "ज्ञान केन्द्र" तक ले जाया जाता है। श्वास के लेने के साथ "शक्ति केन्द्र" से "ज्ञान केन्द्र" तक शक्ति को ले जाया जाता है। श्वास छोड़ने के साथ पुनः शक्ति केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित किया जाता है। अन्तर्यात्रा से सबसे बड़ा लाभ काम वासना से छुटकारा पाया जाता है, तथा ज्ञान केन्द्र सक्रिय होने से ज्ञान व स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है। अन्तर्यात्रा के द्वारा शक्ति को "शक्ति केन्द्र" से "ज्ञान केन्द्र" में स्थानांतरित किया जाता है।

(4) शरीर प्रेक्षा

स्वतः सूचनाओं के द्वारा शरीर के प्रत्येक बाहरी अंग तथा भीतरी एक-एक अंग की प्रेक्षा की जाती है। शरीर के प्रत्येक अंग पर चित्त को ले जाया जाता है। शरीर के प्रत्येक अंग की प्रेक्षा करने से वह स्थान तनाव मुक्त होता है तथा प्रत्येक अंग का संचालन सुचारु हो जाता है। शरीर प्रेक्षा से सबसे बड़ा लाभ शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। शरीर में जिस स्थान पर दर्द होता है, उस स्थान पर चित्त को स्थिर करने से दर्द मिट जाता है।

(5) चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा

शरीर में कुल 13 स्थान ऐसे हैं जहां पर आत्मा (चैतन्य) का मुख्य स्थान रहता है। जैसे-ज्ञान केन्द्र, शांति केन्द्र, ज्योति केन्द्र, दर्शन केन्द्र, विशुद्धि केन्द्र, आनन्द केन्द्र, तैजस केन्द्र, स्वास्थ्य केन्द्र, शक्ति केन्द्र आदि। इन चैतन्य केन्द्रों पर चित्त को स्थिर करने से ये केन्द्र सक्रिय होते हैं तथा उन स्थानों पर आत्मा की शक्ति केन्द्रित होती है। हर चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा से अलग-अलग लाभ है। जैसे ज्योति केन्द्र पर प्रेक्षा करने से आवेश-आवेग शांत होते हैं। दर्शन केन्द्र पर चित्त को स्थिर करने से तीसरा नेत्र खुलता है, समता बढ़ती है, अतीन्द्र ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान केन्द्र पर ध्यान से ज्ञान तंतु विकसित होते हैं। विशुद्धि केन्द्र पर ध्यान से वासनाओं की शुद्धि होती है। आनन्द केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित करने के भावधारा निर्मल होती हैं आदि।

(6) लेश्याध्यान

लेश्याध्यान का अर्थ रंगों का ध्यान। चैतन्य केन्द्र पर अलग-अलग रंग की अनुभूति से ध्यान किया जाता है, जैसे ज्ञान केन्द्र पर पीले रंग (हल्दी रंग) का ध्यान करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। ज्योति केन्द्र पर सफेद चन्द्रमा का ध्यान करने से क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय, उपशांत होते हैं। चैतन्य केन्द्र पर अरुण रंग (उगता सूर्य) का ध्यान करने से आत्म शक्ति बढ़ती है। धीरे-धीरे अभ्यास से अतीन्द्रिय ज्ञान की प्राप्ति होती है। इससे हम स्थूल से सूक्ष्म जगत्-प्रज्ञा लोक में चले जाते हैं। विशुद्धि केन्द्र पर पीले रंग का ध्यान करने से विचारों की शुद्धि होती है।

आनन्द केन्द्र पर हरे रंग का ध्यान करने से भाव शुद्धि होती है, आनन्द की प्राप्ति होती है। तैजस केन्द्र पर नीले रंग का ध्यान करने से प्राण शक्ति बढ़ती है। स्वास्थ्य केन्द्र पर नीले रंग के ध्यान से इच्छा शक्ति बढ़ती है। शक्ति केन्द्र पर नीले रंग के ध्यान से वासनाएँ शान्त होती हैं।

(7) भावना

स्वतः सूचनाओं के द्वारा मन को अनित्य, अशरण, भव, एकत्व, अन्यत्व, शौच, आश्रव, संवर, निर्जरा, धर्म, लोक-संस्थान, बोधि, मैत्री, प्रमोद, करुणा, मध्यस्थ भावनाओं से भावित किया जाता है। इनसे अनेक लाभ हैं। इनसे चित्त की शुद्धि होती है। मन की चंचलता मिटती है। मोह का विलय होता है, तथा त्याग की वृद्धि होती है। एक-एक भावना के मन को, आत्मा को भावित किया जाता है। इन भावनाओं को बार-बार दोहराने से संस्कार धारणा एवं आदत का रूप ले लेते हैं, इससे बुरे संस्कार जागने का मौका ही नहीं मिलता। इन भावनाओं के द्वारा कन्याओं को सुसंस्कारित किया जा सकता है।

(8) अनुप्रेक्षा

चित्त को केन्द्रित कर जिस विधा की प्रेक्षा की जाती है, उसका बार-बार चिन्तन करना अनुप्रेक्षा कहलाता है। कन्याओं को सुसंस्कारित करने के लिए करुणा, मैत्री, परस्परता, सामंजस्य, विनय, नैतिकता, प्रामाणिकता की अनुप्रेक्षाओं का प्रयोग करवाया जा सकता है। अनुप्रेक्षा करते समय सबसे पहले कायोत्सर्ग, महाप्राण-ध्वनि के द्वारा चित्त को एकाग्र किया जाता है। चित्त एकाग्र हो जाने पर स्वतः सूचना के द्वारा चिन्तन दिया जाता है कि करुणा का भाव पुष्ट हो रहा है। मैत्री का भाव पुष्ट हो रहा है। नैतिकता का भाव पुष्ट हो रहा है। पुनः-पुनः वही चिन्तन दोहराया जाता है। यह बात अवचेतन मन तक पहुंचाई जाती है ताकि संस्कार धारणा में पहुंच कर स्थायी तथा पुष्ट बन जायें। रोज-रोज अनुप्रेक्षा करने पर वैसे ही बनते चले जाते हैं। वे संस्कार हमारी आदत बन जाती है तथा हम वैसे ही व्यवहार करने लग जाते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ का कहना है, **“जैसी लेश्याएं वैसे भाव, जैसे भाव वैसे विचार, जैसा विचार वैसा व्यवहार।”** हमें भाव शुद्धि करनी है, जो कि अनुप्रेक्षा के प्रयोग से ही संभव है।

इस प्रकार प्रेक्षाध्यान के आठ चरणों के प्रयोग के माध्यम से कन्याओं के भावों को शुद्ध किया जाता है। भाव शुद्धि करके उन्हें सुसंस्कारित किया जा सकता है। प्रतिदिन प्रयोग करने से अशुभ संस्कारों के पनपने का अवसर ही नहीं मिलेगा। हम अपने मन व आत्मा को जिन विचारों से भावित करते हैं वे ही विचार हर क्षण मस्तिष्क में गूंजते रहते हैं तथा उसी के अनुरूप हम मन, वचन, शरीर से व्यवहार करने लग जाते हैं। एक कन्या को सुसंस्कारित करने का अर्थ-दो परिवारों को सुसंस्कारित करना। कन्या वह पौधा है जो बड़ा होकर बहिन, पत्नि, माँ, दादी के रूप में वृक्ष तथा वृक्ष से वटवृक्ष बनता है। आज के युग की समस्याओं के निवारण हेतु पारिवारिक सौहार्द बढ़ाना आवश्यक है। पारिवारिक सौहार्द के लिए कन्या को सुसंस्कार देना वर्तमान युग की प्रथम प्राथमिकता है। कन्या सुसंस्कारित होने पर आचार्य तुलसी की वे पंक्तियाँ स्वतः चरितार्थ हो सकेगी-

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से।

राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।।

-सलाहकार, जैन विश्वभारती, विश्वविद्यालय, लाडनूँ (राज.)